(लेवल 1 व 2 की भाषा द्वितीय के लिए)

अलंकार — कविता के सौंदर्य को बढ़ाने

अलम् + कृ + घञ्
↓ ↓ ↓
उपसर्ग धातु प्रत्यय

अलङ्कार

अलङ्कार शब्द भूषण अर्थ वाले अलम् अव्यय पूर्व वाले 'कृ' धातु से घञ् प्रत्यय जोड़कर बनता है। अलङ्करोति इति अलङ्कारः इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो अलङ्कृत करता है, वह अलंकार कहलाता अलङ्कार को परिभाषित करते है अतः काव्यादर्श में महाकवि दण्डी ने हुए कहा है-

काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते ।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलङ्कार कहते हैं।)

अलंकार

शब्दालंकार

1. अनुप्रास
2. यमक
3. श्लेष

अर्थालंकार

1. उपमा
2. रूपक
3. उत्प्रेक्षा
4. स्वाभावोक्ति
5. दीपक
6. निदर्शना

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

शब्दालङ्ककार:

(1) अनुप्रास:

वर्णसाम्यमनुप्रास: - मम्मट :- काव्यप्रकाश

अनुप्रास: शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् । - सा. दर्पण :- आचार्य विश्वनाथ

स्वर वर्णों की असमानता रहने पर भी व्यञ्जन वर्षों की समानता होने पर अनुप्रास अलङ्कार होता है।

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

भारते भातु भारती इस वाक्य में भ, र तथा त व्यञ्जन वर्णों की आवृत्ति है।

आदाय बकुलगन्धान्धीकुर्वन पदे पदे भ्रमरान् ।

अयमेति मन्दं मन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः ।।

उपर्युक्त उदाहरण में ''गन्धान्धी'' शब्द में 'न' 'ध' वर्ण की, 'कावेरीवारि' शब्द में 'व' 'र' वर्ण की, पावनः पवनः शब्दों में 'प' 'व' 'र' वर्णों की समानता प्राप्त है यद्यपि स्वर भिन्न भिन्न हैं । अतः यहाँ छेकानुप्रास अलंकार है ।

अनुप्रास :- छेकानुप्रास - वर्ण एक बार आवृत्त

वृत्यनुप्रास

लाटानुप्रास ✓

श्रुत्यनुप्रास

वर्ण आवृत्त

अन्त्यानुप्रास ✓

अनुप्रास के पाँच भेद हैं-

छेकानुप्रासः, वृत्त्यनुप्रासः, श्रुत्यनुप्रासः, अन्त्यानुप्रासः, लाटानुप्रासः ।

(1) छेकानुप्रासः

छेको व्यञ्जनसङ्घस्य सकृत्साम्यमनेकधा ।

जहाँ पर व्यंजन समूह (अनेक व्यंजन वर्णों) की एक-एक बार आवृत्ति हो उसे छेका अनुप्रास कहते हैं। छेकानुप्रास में अनेक पद की एक बार आवृत्ति होती है।

उदाहरण-

आदाय बकुलगन्धान्धीकुर्वन पदे पदे भ्रमरान् ।
अयमेति मन्दं मन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः ॥

उपर्युक्त उदाहरण में ''गन्धान्धी'' शब्द में 'न' 'ध' वर्ण की, 'कावेरीवारि' शब्द में 'व' 'र' वर्ण की, पावनः पवनः शब्दों में 'प' 'व' 'न' वर्णों की समानता प्राप्त है यद्यपि स्वर भिन्न भिन्न हैं । अतः यहाँ छेकानुप्रास अलंकार है ।

"लताकुंजं गुंजन्मदवदलिपुंजं चपलयन्
समालिङ्गन्नङ्ग, द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन् ।।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्
रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि-दिशि ।।

अनङ्गरङ्ग प्रतिमं तदङ्ग भङ्गीभिरङ्गीकृत मानताङ्ग्याः ।
कुर्वन्ति यूनां सहसा यथैताः स्वान्तानि शान्तपरिचिन्तनानि।।

यहाँ नङ्ग, रङ्ग, दङ्ग, भङ्गी, रङ्गी इत्यादि शब्दों में वर्ण साम्य है। अतः यहाँ अनुप्रास अलङ्कार है।

"श्रियःपति श्रीमति शासितुं जगत् जगतां निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन्ददर्शावतरन्त मम्बरद्धिरण्यगर्भाङ्ग भुवं मुनिं हरिः ॥

यहाँ पति, मति जगत्, जगतां इन शब्दों में कहीं स्वर-व्यञ्जन दोनों का कहीं व्यञ्जन मात्र का साम्य है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

यमकः

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः ।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ।।

सार्थक या भिन्नार्थक स्वरयुक्त व्यंजन वर्णों के समूह की उसी क्रम से आवृत्ति होने पर यमक अलंकार होता है।

Eng
नवपलाश-पलाशवनं पुरः
पत्ते पलाश वृक्ष
स्फुट पर रागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोक यत्
स सुरभिं सुरभिं सुमनो भरैः ॥

इस पद्य में पलाश-पलाश दोनों सार्थक पद हैं, प्रथम पलाश का अर्थ पल्लव तथा द्वितीय का अर्थ पलाश वृक्ष है। पराग-पराग में प्रथम सार्थक द्वितीय निरर्थक, लतान्त-लतान्त में प्रथम निरर्थक, द्वितीय सार्थक जिसका अर्थ लता का अन्तभाग है, सुरभिं-सुरभिं में दोनों सार्थक प्रथम सुरभि का अर्थ बसन्त ऋतु तथा द्वितीय सुरभि का अर्थ सुगन्धि है। रभिंसु-रभिंसु दोनों निरर्थक पदों की आवृत्ति है अतः यमक अलंकार है।

श्लेष

श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष उच्यते । :

पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव ।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥

अत्र अस्य श्लोकस्य द्विधा अर्थः अस्ति। एकः भिक्षुकः एकस्य राज्ञः पुरतः तस्य प्रशंसां कुर्वन् आत्मनः स्थितिं वदति। राज्ञः पक्षे अस्यार्थः अस्ति - 'भो राजा। भवतः प्रासादः दीर्घः, स्वर्णजटितः चास्ति। भवतः गृहे करिणः अपि मोदयन्ते।' भिक्षुकस्य पक्षे अस्यार्थः अस्ति - 'मम गृहे रेणुः प्रसृता अस्ति। अस्माकं बान्धवाः भूमौ शयनं कुर्वन्ति। बालकाः भोजनाय रोदनं कुर्वन्ति इति।' सम्प्रति भवतः मम च दशा सदृशमेव अस्ति। इति

अतः अत्र श्लेष अलंकारः अस्ति।

शब्द	राजा के पक्ष में	याचक के पक्ष में
पृथुकार्त स्वरपात्रं	राजा का घर सोने के बडे बडे बर्तनो से युक्त है।	याचक का घर बालकों के भूख से रोने का स्थान है।
भूषितनिःशेषपरिजनं	सारे सेवक अलंकृत है।	सारे सेवक भूमि पर पडे है।
विलसत्करेणुगहनं	झूमती हुई हथिनियों से युक्त महल है।	चूहों के खोडे हुए बिलों की धूल से भरा घर है।

"कस्मिन् दशायां श्लेष अलंकार भवति?"

(क) यदा एकस्य शब्दस्य बहुविधाः अर्थाः भवन्ति।

(ख) यदा शब्दाः समानध्वनिं कुर्वन्ति।

(ग) यदा कस्यचित् वस्तुनः अन्येन वस्तुना सह तुलना क्रियते।

(घ) अतिशयोक्तिपूर्वकं यदा कर्म वर्ण्यते।

अनुप्रास अलङ्कारे कस्य सादृश्यं लभ्यते ?

(क) शब्दानां

(ख) स्वरः

(ग) व्यंजन वर्णः

(D) अर्थ

"नवपलाश-पलाशवनं पुरः" - इस वाक्य में कौन-सा अलंकार है?

(A) अनुप्रास

(B) यमक

(C) श्लेष

(D) उत्प्रेक्षा

दोपहर 2 बजे प्रैक्टिस

8 फरवरी

10 फरवरी

15